और पुस्तकालय चल पड़ा बड़े काम की छोटी–सी शुरुआत

राजाबाबू ठाकुर

मध्य प्रदेश के कुछ विद्यालयों में बच्चों के लिए पुस्तकालय शुरू करने के प्रयासों का विवरण इस लेख में प्रस्तुत है। विद्यालय में पुस्तकालय के लिए किताबें थीं, बच्चे और शिक्षक भी थे, लेकिन काम आसान नहीं था। आसान इसलिए नहीं था क्योंकि बच्चों के किताबों के प्रति ज़िम्मेदार होने को लेकर, उनके सीखने को लेकर विश्वास नहीं था। विद्यालय की स्थितियों, अधिकारियों की माँगों के चलते शिक्षकों का शायद ख़ुद पर भी विश्वास नहीं था। लेकिन पुस्तकालय की ज़रूरत, बच्चों की क्षमता, आदि बिन्दुओं पर बातचीत से, पुस्तकों के सन्दर्भ में मिले सहयोग से शिक्षक ख़ुद पर अपने विश्वास को भी जीत पाए, और बच्चों को भी पुस्तकालय उपलब्ध करवा पाए। असल में, पुस्तकालय स्कूल में ही मौजूद था, और हर स्कूल में मौजूद है। ज़रूरत है अपने प्रति और अपने बच्चों के प्रति विश्वास की। यही विश्वास सहयोग लेने और देने के लिए भी प्रेरित कर सकता है। –सं.

वर्ष 2019 में, मैं एक संस्था के साथ जुड़कर सागर, मध्य प्रदेश के एक ब्लॉक में कुछ स्कूलों के साथ काम करता था। यहाँ मैं शिक्षकों के सहयोगकर्ता के रूप में काम करता था। इस संस्था के साथ काम के दौरान मुझे काफ़ी सारे अच्छे लेखकों की किताबों व लेखों को पढ़ने, और विभिन्न विषयों में अपनी समझ को बढ़ाने का मौक़ा मिला। इन्हीं में से एक विषय था– बच्चों के लिए बाल साहित्य की किताबों का महत्त्व। बहुत-से अच्छे लेखों व किताबों को पढ़कर बच्चों के लिए बाल साहित्य का महत्त्व मुझे कुछ हद तक पता चल गया था। लेकिन चुनौती यह थी कि इसका इस्तेमाल बच्चों के सीखने-सिखाने को बेहतर बनाने में कैसे किया जाए; और कैसे इसके महत्त्व को अच्छे से समझा जाए।

इस सन्दर्भ में मैंने कई स्कूलों के शिक्षकों से बात की। शिक्षकों से जो चर्चा हुई, उसमें बार-बार व्यक्त हुए बिन्दु थे– "नहीं सर! पुस्तकें तो बच्चों को नहीं दी जा सकतीं क्योंकि वो फाड़ देते हैं, और गुमा देते हैं"; "उनकी कहाँ रुचि है पढ़ने में"; "उनसे किताबें देने-लेने का काम कौन करेगा"; आदि। मैंने उनसे बहुत चर्चा की। उनसे कहा, "ये किताबें बच्चों के लिए ही तो हैं। इनसे बच्चे बहुत कुछ सीख सकते हैं, उनकी पढ़ने में रुचि बढ़ेगी। आप किताबों के साथ नई-नई गतिविधियाँ भी बच्चों को करा सकते हैं। इनसे बच्चों का रुझान स्कूल की ओर भी बढ़ेगा, और आपके साथ भी जुड़ाव बनेगा। अगर कुछेक किताब फट जाती हैं या गुम जाती हैं, तब कोई बड़ी बात नहीं होगी। लेकिन अगर बच्चों को किताबें दी जाएँ, इससे वे किताबों का इस्तेमाल करके पढ़ना-लिखना, अभिव्यक्त करना, सुनना, तर्क देना जैसे कौशल सीख सकेंगे।"

लेकिन शिक्षकों के डर को मैं कम नहीं कर पाया। उनसे नियमित बात करते-करते पता चला कि मुश्किलें और भी थीं। उन्होंने बताया कि किताबें गुमने या फटने पर अधिकारी उन्हें डाँटते हैं। तब हमने इस समस्या पर और गम्भीरता से सोचा। हल यह निकला कि मैं अपनी संस्था से

कुछ किताबें अपने नाम पर दर्ज करके स्कूल ले आऊँ। इन किताबों को बच्चों को पढ़ने के लिए दिया जाए। ऐसे में न तो अधिकारियों की नुक़्ताचीनी का डर होगा न ही किताबें खोने या फटने का। हमने यह भी चर्चा की कि इन किताबों को बच्चों को घर भी ले जाने दिया जाए। इसके लिए हमें एक रजिस्टर बनाना होगा जिसमें बच्चों द्वारा ली जा रहीं व वापिस की जा रहीं किताबों का ब्योरा रखा जाएगा। शिक्षकों ने बताया कि रजिस्टर उनके पास है, और हम यह प्रयोग करके देख सकते हैं। लेकिन मेरी एक शर्त भी थी। मैंने शिक्षक साथियों से वादा लिया कि अगर कुछ समय किताबों को इस्तेमाल करने के बाद लगता है कि बच्चे किताबों का इस्तेमाल और रखरखाव ठीक से कर रहे हैं, तब उन्हें अपने स्कूल की किताबें भी बच्चों को उपलब्ध करानी होंगी। शिक्षक साथी इसपर सहमत थे।

तीसरी समस्या शिक्षकों के काम के बोझ की थी। उन्होंने बताया, "हमारे पास पहले ही बहुत काम है, उसपर हम पुस्तकालय को कैसे सँभालेंगे?" बातचीत से इसका हल निकला कि बच्चों को ही पुस्तकालय की ज़िम्मेदारी दी जाए। वे ही अपने साथियों को किताबें दें और वापिस लें। इससे उनमें ज़िम्मेदारी की भावना भी आएगी, और स्कूल के प्रति अपनापन भी। शिक्षक साथियों में इसपर संशय तो था, लेकिन चर्चा, और शायद स्कूल की अपनी किताबें न होने के नाते वे मान गए।

मैंने किताबें स्कूलों में दीं, और हमारा पुस्तकालय शुरू हुआ। लेकिन अब एक बड़ी समस्या को हल करना था। केवल बच्चों को पुस्तकें दे देने-भर से पुस्तकालय नहीं बनता, उसके लिए बच्चों के साथ पुस्तकों से सम्बन्धित गतिविधियाँ भी निरन्तर करनी होती हैं। बच्चों द्वारा पढ़ी जा रहीं (यहाँ चित्रों के माध्यम से पढ़ना भी शामिल है) किताबों पर रोज़ थोड़ा समय निकालकर उनसे बात भी करनी होती है। इससे पता चलता है कि बच्चे किताब को पढ़कर क्या समझ रहे हैं, और क्या वे अपने अनुभवों को उन किताबों से जोड़ पा रहे हैं? किताबों पर बातचीत में बच्चों से छूट गई चीज़ों को जोड़ा जा सकता है। इससे बच्चों की जानकारी में इज़ाफ़ा तो होगा ही, उनकी और किताबें पढ़ने में रुचि भी बढ़ेगी। शिक्षक साथियों ने इस प्रक्रिया को अपनाया, और नतीजे काफ़ी अच्छे रहे।

इस पूरी प्रक्रिया में लगभग 2 वर्षों का समय लगा। इसके आगे भी सतत प्रयास जारी रहे, अब इन स्कूलों में पुस्तकालय चल रहे हैं। इससे बच्चों की रुचि भी बाल साहित्य में बढ़ी है।

इस काम के दौरान मेरी समझ बनी कि शिक्षकों के पास बाल साहित्य की किताबें तो हैं, लेकिन उनका उपयोग कैसे करना है; रखरखाव कैसे होगा; उनके नियमित उपयोग से बच्चों को क्या लाभ होते हैं; इन सवालों पर शिक्षकों के साथ खुली चर्चा, और इसके साथ-साथ इसे करके देखने के लिए प्रोत्साहन, मदद व सामर्थ्य देने की ज़रूरत है। पुस्तकालय और बच्चों के

साथ किताबों के उपयोग के सन्दर्भ में शिक्षकों को किसी प्रकार की ट्रेनिंग भी नहीं दी जाती है। इसके साथ-साथ ग़ैर-अकादमिक कार्यों की अधिकता, पाठ्यक्रम को समय सीमा में पूरा करने की बाध्यता, अधिकारियों का बाल साहित्य के प्रति उपेक्षापूर्ण रवैया, आदि समस्याएँ भी शिक्षकों को बाल साहित्य का उपयोग न करने की ओर धकेलती हैं। लेकिन खुली चर्चा और समझ बनाने के बाद जब एक बार काम शुरू हो गया, तब शिक्षकों को बाल साहित्य पर काम करने में काफ़ी मज़ा आने लगा। शिक्षकों ने कहा, उन्होंने महसूस किया है कि बच्चों की सीखने में रुचि व जितना सीख पाए उसमें भी प्रगति नज़र आती है।

शिक्षकों की बाल साहित्य की समझ

पुस्तकों के साथ गतिविधि कराने और पुस्तकालय की शुरुआत करने से पहले शिक्षकों में बच्चों के लिए रुचिकर पुस्तकों की समझ होना आवश्यक है। इस विषय पर स्कूलों में भ्रमण के दौरान शिक्षकों से चर्चा हुई कि बच्चों के लिए उनके स्तर के अनुसार कैसी और कौन-सी किताबें बेहतर होंगी, और इस चुनाव के आधार क्या होंगे। चर्चाओं से मुझे समझ आया कि शिक्षक इस बारे में ज़्यादा जानकारी नहीं रखते। उनके लिए किताब बस किताब होती है, चाहे जैसी भी हो। देखने पर शायद कुछ बुनियादी छँटाई कर पाएँ, लेकिन यह बहुत त्रुटिपूर्ण व व्यक्तिपरक होगा। इस चुनाव को उन्होंने किन गुणों के आधार पर किया है, यह वे साझा नहीं कर सकते। बहुत सारी चर्चाओं में यह बात भी बार-बार उभरकर आई कि बच्चों के लिए पाठ्यपुस्तक ही सबसे महत्त्वपूर्ण किताब होती है, उन्हें अन्य किताबों से दूर ही रहना चाहिए। जिन शिक्षकों के साथ काम किया जा रहा था, उनसे इस विषय में धीरे-धीरे चर्चा होती रही। इस चर्चा से कुछ मुख्य बिन्दु निकलकर आए। मसलन,

- बच्चों की किताबें सुन्दर चित्रों से सुसज्जित होनी चाहिए। जैसे– जानवर, कार्टून, परिवार, पक्षी, आदि के चित्र;
- चित्रों में एक गतिशीलता हो, ताकि बच्चे लिखे हुए टेक्स्ट के बारे में अनुमान लगा सकें;
- किताबें स्तरानुसार हों। शुरुआती स्तर के बच्चों की किताबों में चित्र बड़े हों, लिखा कम हो, और फ़ौंट बड़ा हो। दूसरे स्तर की किताबों में थोड़ा ज़्यादा लिखा हो सकता है। इसी प्रकार आगे के स्तर के बच्चों के लिए किताबें हों;
- किताबों में सामग्री बहुत लम्बी न हो;
- छोटे बच्चों की किताबों में घटनाओं का दोहराव अधिक हो, इससे बच्चों को मज़ा आता है;
- शुरुआत में छोटे बच्चों के परिवेश के साथ जुड़ाव वाली सामग्री हो;
- किताबों में कल्पनाशीलता और तर्क के पर्याप्त मौक़े हों; आदि।

इस चर्चा के बाद शिक्षकों के साथ 'क्या-क्या हो बच्चों की एक किताब में?' लेख साझा किया गया, और इसपर एक सत्र भी आयोजित किया, ताकि शिक्षकों की समझ इस विषय पर

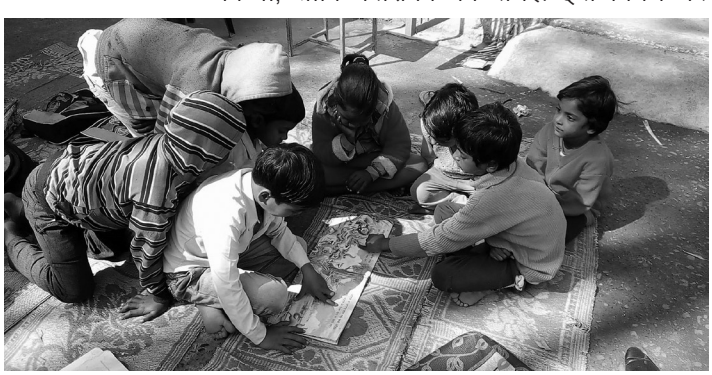

और पुख़्ता हो सके। इस सबसे शिक्षकों को किताबों के स्तरानुसार होने के बारे में, और किस प्रकार की किताबें होनी चाहिए, आदि मसलों पर समझ बनाने में और मदद मिली। (बाद में जब शिक्षकों ने अपने स्कूल में उपलब्ध किताबें बच्चों को दीं, उन्होंने ऐसी किताबों को अलग कर दिया जो बच्चों के लिए उपयुक्त नहीं थीं। शिक्षकों ने कक्षाओं में भी स्तरानुसार किताबों को ही जगह दी।) स्तरानुसार किताबें क्यों हों, इसपर चर्चा से निम्नलिखित बातें सामने आईं :

1. हर कक्षा में विभिन्न स्तरों वाले बच्चे होते हैं। अगर उनको स्तर के अनुसार किताबें पढ़ने के लिए दी जाएँ, वे इस आत्मविश्वास के साथ पढ़ते हैं कि वे पढ़ सकते हैं। ऐसे में, बच्चे ज़्यादा-से-ज़्यादा किताबें पढ़ने के लिए प्रेरित होते हैं।
2. स्तरीकरण की पद्धति को लागू करते समय दो बातों पर ध्यान दिया जाना चाहिए। एक तो, बच्चों के पढ़ने के कौशल का आकलन किया जाए और तब किताबों को स्तरों में विभाजित किया जाए। जैसा कि ऊपर भी कहा गया है, स्तर के अनुसार किताबें पढ़ने से बच्चे आत्मनिर्भर पाठक बनने की तरफ़ बढ़ते हैं।
3. किताबों के स्तरीकरण से बच्चे स्वयं उपयुक्त किताबों को चुन पाते हैं, और किताबों के भण्डार में से अपनी रुचि अनुसार व अपने स्तर लायक़ किताब ढूँढ़ पाते हैं।
4. स्तरानुसार किताबें होने से बच्चों की प्रगति का आकलन भी आसानी से किया जा सकता है।
5. शिक्षकों में स्तरानुसार किताबों की समझ होने पर वे उपयुक्त स्तरों की किताबें पहचानकर अपने स्कूल व अपनी कक्षा के स्तर की किताबें कक्षा हेतु ख़रीद सकते हैं।

स्कूल में, शिक्षकों ने किताबों को चार स्तरों में बाँटा। स्तर एक में वे किताबें थीं, जिनमें एक पेज पर एक या दो वाक्यों में 5-10 शब्द तक ही लिखे थे। दूसरे स्तर की किताबों में दो-चार वाक्यों में 10-20 शब्दों वाली किताबों को रखा गया। तीसरे स्तर की किताबों में प्रति पेज 5-10 वाक्य और 20-40 शब्द वाली किताबों (15-20 पेज से कम वाली) को रखा गया। बाक़ी की मोटी व अधिक लिखी हुई किताबों को चौथे स्तर पर रखा था। किताबों को स्तरानुरूप छाँटते समय हमने उसमें बने चित्रों व शब्दावली का भी ध्यान रखा। हमने ध्यान रखा कि उनमें ऐसे शब्द हों जो बच्चों को आसानी से समझ आ सकें, और वे जीवन में उनका इस्तेमाल करते रहते हों। स्तरानुसार इस्तेमाल की गईं किताबों की सूची नीचे दी जा रही है–

पुस्तक का नाम	प्रकाशन	स्तर	पुस्तक का नाम	प्रकाशन	स्तर
कुत्ते का एक दिन	एकलव्य	1	*नाना-नानी*	एकलव्य	2
सालाना बाल कटाई दिवस	रीड इंडिया	1	*रमा के तारे*	प्रथम बुक्स	2
नटखट कुत्ता	प्रथम बुक्स	1	*रूमानिया*	प्रथम बुक्स	2
Water	एनबीटी	1	*जंगल किसका*	पराग	2
नाव चली	एकलव्य	1	*सारे मौसम अच्छे*	सहमत	2
चिड़ियाघर की सैर	एनबीटी	1	*महागिरी*	सीबीटी	2

पुस्तक का नाम	प्रकाशन	स्तर	पुस्तक का नाम	प्रकाशन	स्तर
मछली नदी खोलकर बैठी	एकलव्य	1	*निराली दादी*	प्रथम बुक्स	2
पहलवान जी और केला	प्रथम बुक्स	1	*नन्हे चूजे की दोस्त*	एकलव्य	2
Three Friends	एकलव्य	1	*नोना और सेब का पेड़*	एकलव्य	2
क्यों भई क्यों?	प्रथम बुक्स	1	*हमारी गाय जनी*	एकलव्य	2
Rain	एकलव्य	1	*खिचड़ी*	एकलव्य	2
भालू ने खेली फ़ुटबॉल	एकलव्य	1	*तुमने मेरा अण्डा तो नहीं देखा*	एकलव्य	2
नीलोफर की मुस्कान	एकलव्य	1	*रूसी और पूसी*	एकलव्य	2
मैं भी	एकलव्य	1	*चुलबुल की पूँछ*	प्रथम बुक्स	2
सात पूँछों वाली चुहिया	प्रथम बुक्स	3	*शहर में शेर*	प्रथम बुक्स	4
लापता बल्ला	प्रथम बुक्स	3	*विश्व विजेता मिर्च*	प्रथम बुक्स	4
एक मोर नाचा नहीं	प्रथम बुक्स	3	*किमिया*	एकलव्य	4
श्रृंगेरी श्रीनिवास ने हँसना सीखा	प्रथम बुक्स	3	*मेरी परनानी और मेरी परदादी*	प्रथम बुक्स	4
गोकुल के सपने	प्रथम बुक्स	3	*सारस*	प्रथम बुक्स	4
गुड़िया का भालू	सीबीटी	3	*बादशाही पार्क*	प्रथम बुक्स	4
दीदी, दीदी, चीज़ें ऊपर क्यों नहीं गिरती हैं?	प्रथम बुक्स	3	*कल्लू के किस्से 3 – मंगू माली और अँबिया भूत*	प्रथम बुक्स	4
मेरी जोया चली गई	एकलव्य	3	*अक्ल बड़ी या भैंस*	एकलव्य	4
जिद्दी शन्नो	एकलव्य	3	*मिजबान*	एकलव्य	4
निराली पोशाक	सीबीटी	3	*छुपन-छुपाई*	एकलव्य	4
मुनिया ने पाया सोना	एनबीटी	3	*छींका-छींक*	एकलव्य	4
बिरजू की मुसीबत	एनबीटी	3	*अनारको के आठ दिन*	राजकमल	4
लाइट्स कैमरा एक्शन	प्रथम बुक्स	4	*ध्यान सिंह 'चन्द' : हॉकी के जादूगर*	प्रथम बुक्स	**4**

सूची में दी गई किताबों के अलावा *बरखा* सीरीज़ की समस्त स्तरों की किताबों के साथ और भी बहुत-सी किताबें हमने बच्चों को स्वतंत्र रूप से उपलब्ध कराईं। स्तरानुसार किताबें चुनने के पश्चात शिक्षकों के समक्ष एक समस्या यह थी कि किताबों से सम्बन्धित कौन-सी गतिविधियाँ की जा सकती हैं। हमने साथ मिलकर कुछ गतिविधियाँ खोजीं, और उनपर काम किया। जैसे–

1. स्तर एक के बच्चों के लिए किताब के पाठ से सम्बन्धित चित्र बनाना। उसके नीचे नाम लिखना और उनका लिपि से परिचय कराना;
2. शिक्षक द्वारा चित्र बनाना और चित्र का नाम लिखने हेतु बच्चों को प्रोत्साहित करना, ताकि शुरुआती स्तर के बच्चे पढ़ना-लिखना सीख सकें;
3. किताब से कुछ शब्दों का चुनाव कर उनकी पहचान बच्चों को कराना;
4. चुने हुए शब्दों से उच्च स्तर के बच्चे कोई अन्य कहानी या वाक्य का निर्माण करें;
5. सभी बच्चों के साथ शीर्षक पर चर्चा व चित्रों या कहानी के अनुसार नवीन शीर्षक बताना;
6. स्तर एक के बच्चों से चित्रों के आधार पर कहानी का अनुमान लगवाना;
7. मौखिक रूप से कहानी के अन्त में बदलाव करना;
8. कहानी को आगे बढ़ाना;
9. उच्च स्तर के बच्चों को लिखित में कहानी के अन्त में बदलाव करने हेतु प्रोत्साहित करना;
10. नई कहानी गढ़ना;
11. बिना किसी की मदद के कहानी-कविता से सम्बन्धित प्रश्नों के उत्तर खोजना, और उत्तरों के ऊपर तर्क देना;
12. मुखर वाचन, सह पठन, जोड़ों में पठन और स्वतंत्र पठन कराना;
13. कहानी पर नाटक करना, ताकि बच्चे और भी किताबें पढ़ने के लिए प्रेरित हों व किताबों का आनन्द ले सकें;
14. पढ़ी गईं किताबों में से कुछ शब्दों को कक्षा में स्थान देना, और उन शब्दों पर रोज़ थोड़ा-थोड़ा काम करना; आदि।

शिक्षक कभी-कभी इस प्रकार की और भी गतिविधियाँ बच्चों के साथ करते थे। बाद में इसमें एक अलग तरह की गतिविधि हमने जोड़ी। इस गतिविधि ने हमारे समक्ष बातचीत के व सीखने-सिखाने के नए आयाम खोले। हमने बच्चों को पढ़ी हुई किताब से सम्बन्धित चित्र बनाने को कहा, और उनके बनाए चित्रों पर चर्चा की। हमने चर्चा में बच्चों से पूछा कि उन्होंने वह चित्र क्यों, और क्या सोचकर बनाया। उनसे बड़ी ही कमाल की बातें जानने को मिलीं। चित्र बनाने में किताब के अलावा उनके ढेरों निजी अनुभव शामिल होते

थे। बाद में इन्हीं चित्रों को संकलित कर, और धागे से सिलकर हमने कुछ चित्र किताबें भी बनाईं, जिनका इस्तेमाल अन्य बच्चों ने किया।

पुस्तकालय से सकारात्मक परिवर्तन

कुछ समय तक सभी स्कूलों में मेरे द्वारा उपलब्ध कराई गईं किताबों से ही पुस्तकालय चले। पर जब शिक्षकों को पुस्तकालय के लाभ बच्चों में दिखने शुरू हुए, और उनका किताबें गुमने या फटने का डर भी दूर हुआ, तब उन्होंने वर्षों से सन्दूकों में बन्द किताबों को निकाला, और कक्षाओं में अलमारियों में या रस्सियों पर उन्हें जगह दी। अब कोई भी बच्चा अपने ख़ाली समय में इन्हें ले और पढ़ सकता था। पुस्तकालय से बच्चों की रुचि किताबों में बढ़ी, और कुछ बच्चे जो स्कूल नहीं आते थे, वे भी रोज़ स्कूल आने लगे। एक स्कूल ऐसा था जिसके दो बच्चे कभी स्कूल नहीं आते थे। इस स्कूल में हमने पुस्तकालय की शुरुआत की। बच्चे पहले दिन किताबें घर ले गए, और न आने वाले बच्चों को इस बारे में बताया। अगले ही दिन वे दोनों बच्चे आए, और आते ही सबसे पहले सारी किताबों को उलटना-पलटना शुरू कर दिया। कुछ देर किताबों को देखने के बाद वे मेरे पास आए और पूछा, "क्या हम भी किताब ले सकते हैं?" "हाँ, बिलकुल! ये किताबें आप लोगों के लिए ही तो हैं।" ऐसा जवाब सुनकर वे बहुत ख़ुश हुए, और किताबें ले गए।

इसी तरह की एक और घटना हुई। एक स्कूल में दो शिक्षिकाएँ थीं, और मैं दोनों के ही साथ कार्य करता था। एक शिक्षिका कक्षा 1-3 को पढ़ाती थीं, और दूसरी कक्षा 4 व 5 को। पहली वाली शिक्षिका की कक्षा 3 में एक बच्चे का नाम दर्ज था, लेकिन इन तीन वर्षों में वह बस दो-तीन बार ही स्कूल आया था। मैंने एक दिन उस बच्चे को घर से बुलाया। वह आ तो गया, लेकिन मैडम कहने लगीं, "अभी आप दूसरी तरफ़ मुँह करेंगे, यह भाग जाएगा।" मैंने उस बच्चे से बात करने की कोशिश की, लेकिन उसने कोई जवाब नहीं दिया। मैं उसे गतिविधियों में शामिल करने की कोशिश करता रहा, पर शुरुआत में उसने कोई रिस्पोंस नहीं दिया। बहुत मशक़्क़त के बाद वह कुछ-कुछ गतिविधियों में शामिल होने लगा। इसी स्कूल में शिक्षिकाओं की सहमति व मदद से दोनों ही कक्षाओं में रस्सियों के सहारे किताबों को टाँगकर पुस्तकालय चलाया गया। बच्चों से बोला गया कि वे यहाँ भी ख़ाली समय में किताब पढ़ सकते हैं, और दर्ज कराकर घर भी ले जा सकते हैं। जब बच्चों को स्वतंत्र रूप से किताबें पढ़ने को बोला गया, तब सबसे आगे वही बच्चा आया जो पिछले दिनों तक स्कूल

के नाम तक से डरता था। किताबों से उसके लगाव के कारण धीरे-धीरे यह बच्चा नियमित स्कूल आने लगा, और किताबों के असर से वह कुछ-कुछ शब्दों को पढ़ना-लिखना, अपना नाम लिखना, आदि भी सीख गया।

एक दूसरा वाक़िया एक अन्य स्कूल का है जहाँ बच्चों को किताबें नहीं दी जाती थीं। किताबें न देने के पीछे तर्क यह था कि बच्चों को पढ़ना तो आता ही नहीं, फिर वे किताबों का क्या करेंगे। काफ़ी चर्चा के बाद किताबें निकलवाई गईं, और बच्चों के सामने उनका मुखर वाचन किया गया। तभी एक आश्चर्यजनक घटना हुई। एक बच्चा, जिसे बिलकुल भी पढ़ना नहीं आता था, यहाँ तक कि अक्षर पहचान तक में उसे समस्या थी, वह शिक्षिका के आगे-आगे पढ़े जा रहा था और अन्य बच्चों को भी बता रहा था, क्योंकि वह पढ़ी जा रही किताब को पहले सुन चुका था। इस घटना से किताबें देने और उन्हें पढ़कर सुनाने में शिक्षिका का भरोसा बढ़ा। उन्होंने किताबों से सम्बन्धित नियमित गतिविधियाँ कराना, व बच्चों को किताबें देना भी शुरू किया। इस प्रक्रिया से सीखकर अब वे पाठ्यपुस्तकों को भी बच्चों से बातचीत और मुखर वाचन करके ही पढ़ाने लगीं।

असल में, पुस्तकें केवल पढ़ने व प्रश्नों के उत्तर खोज लेने के लिए नहीं होतीं, बल्कि वे तो पढ़कर आनन्द लेने, अनजानी जगहों की सैर करने, अनदेखी चीज़ों को चित्रों-शब्दों के माध्यम से देखने-सोचने का मौक़ा देती हैं। वे किसी विषय पर कल्पना करने, सोचने, तर्क करने, अतीत या भविष्य में ले जाने जैसे और भी न जाने कितने काम करती हैं, इसलिए बच्चों के सीखने में इनका महत्त्व बहुत अधिक है। असल में, यह कह सकते हैं कि पुस्तकों की दुनिया में खोकर पाठक जीवन के मर्म को और गहराई से समझ सकता है।

राजाबाबू ठाकुर, वर्तमान में एकलव्य संस्था में बतौर प्रोजेक्ट एसोसिएट कार्यरत हैं। इन्हें पढ़ना, लिखना और ऐतिहासिक जगहों पर घूमना पसन्द है।

सम्पर्क : rajathakur8530@gmail.com